आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2017-2019

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 4 | अंक 20 | उदयपुर शुक्रवार 01 नवम्बर 2019 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

अयोध्या सदैव ही राममय

-डॉ. महेन्द्र भानावत -

सन् 1986 की कृष्ण जन्माष्टमी को मैं अयोध्या में रहा। अयोध्या की यात्रा मीरांबाई ने भी की थी। उन्हीं से सम्बन्धित जानकारी बाबत् हमारी यह यात्रा बनी। इसमें लोकदेवता कल्लाजी राठौड़ के सेवक सरजुदासजी का हमें समग्र सान्निध्य, मार्गदर्शन तथा शोध-दृष्टि प्राप्त हुई।

इनके अलावा डॉ. सुधा गुप्ता तथा मेरा सुपुत्र मुक्तक था। दुर्योग से अब दोनों हमारे बीच नहीं हैं। सुधाजी 9 नवम्बर 1987 को तथा मुक्तक 7 अप्रेल 1991 को बीमारी से ग्रस्त हो छले गये। बहुत बाद बापूजी सरजुदासजी भी 24 अक्टूबर 2005 को हमें छोड़ चले गए।

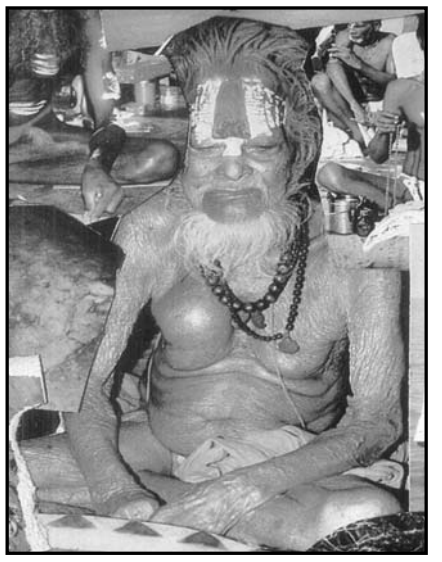

दो दिन का प्रवास क्षण भर भी राम विहीन नहीं लगा। राम की इस धरती का आज भी वहां बड़ा पुण्य और प्रभाव लगता है तब राम के समय कैसी रही होगी यह धरा! यहां साधुओं का रेला-मेला सर्वत्र ही देखा जा सकता है। कई तो शरीर विसर्जन के लिए यहीं निवास कर रहे हैं। कई साधना मग्न हैं। पूरी अयोध्या में जहां-जहां भी हम घूमे, हमें कोई साधु भीख मांगता नहीं मिला।

श्रवण के तीर लगने के प्रसंग में सरयू नदी का पुण्य यहां आकर कोई महसूस करे। इसके किनारे जंगलों में कई साधु तपस्यारत हैं। बड़ी जगह बड़े बने रहे व्यक्ति भी सेवानिवृत्ति के बाद यहां अनाम मिले। अन्तिम अवस्था शान्तिपूर्वक पुण्यलाभी व्यतीत हो, ऐसी चाह रखने वाले यहां खोजने पर मिल जायेंगे।

हम लोग सुबह-शाम सरयू में विभिन्न स्थानों पर नहाते रहे। सरयू के बहते पानी में एक के बाद एक शव देखने को मिले। धारणा है कि पवित्र नदी में शव विसर्जन से मृतक को सुगति प्राप्त होती है। सिक्के प्राप्त करने वाले पानी में जगह-जगह गोते लगाते सिक्के खोजते लगे। बताया गया कि सब ठेके पर काम कर रहे हैं।

प्रसिद्धि है कि शिवजी ने गंगा को अपनी जटा पर झेली तो चार धाराएं बनीं जो गंगा, जमुना, सरस्वती और सरयू कहलाईं। प्रसिद्धि है कि राम के पुरखों ने मृत्युलोक में गंगा लाने को बड़ी तपस्या की। जब उन्हें सफलता नहीं मिली तो भगीरथ के तपस्या करने पर गंगावतरण हुआ। भगीरथ को पता चला कि उनका घर पीछे छूट गया है अत: उन्होंने उसके प्रवाह को रोका। इससे एक और सूरत मिली। वही सूरत सरयू के नाम से प्रसिद्ध हुई।

डॉ. महेन्द्र भानावत, सरजुदासजी, मुक्तक भानावत तथा डॉ. सुधा गुप्ता।

यहां हनुमानगढ़ी के हनुमानजी की बड़ी मान्यता है। कहते हैं, राम जब छोटे थे तब बन्दर के लिए मचल पड़े थे। ऐसी स्थिति में हनुमान लाये गए। दोनों बचपन से ही साथ रहे।

यहीं हमने पुलिस के पहरे में राम जन्मभूमि के दर्शन किये। दस लाख वर्ष पुरानी यह धरती है। अब कई जगह ऊंची चढ़ आई है। कहीं दस हाथ, कहीं पन्द्रह हाथ तो कहीं इससे भी ऊंची। सरयू भी तब 20 हाथ नीचे बह रही थी।

अयोध्या सर्वत्र राममय है। सर्वत्र मन्दिर मिलेंगे। सर्वत्र राम नाम का जप सुनाई देगा। सर्वत्र भजन स्तुति करते, आराधना-अनुष्ठान करते लोग मिलेंगे। यहां हमने कृष्ण मन्दिर भी देखे। राम के साथ कृष्ण की जय-जयकार।

यहीं बद्रीनाथ धाम के शंकराचार्यजी से हमारी भेंट हुई। खाकी अखाड़े का मन्दिर भी हमने देखा। इस मन्दिर में पूजान्तर्गत सौ डेढ़ सौ के करीब शालिग्राम ही शालिग्राम देखे गए।

यहीं से सन्त गुणवन्तदास राजस्थान के मेड़ता ठिकाने में आये थे। उनके पास पूजान्तर्गत चल शालिग्राम था। यह मन्दिर श्री पंच रामानन्दीय खाकी अखाड़ा मन्दिर के नाम से जाना जाता है।

मीरांबाई अयोध्या दो बार गई। पहली बार अपनी माता की मृत्यु के पश्चात उनके फूल विसर्जन हेतु काका रायमल के साथ थी। कुल दस व्यक्ति थे। यह राजकीय यात्रा घुड़सवारी पर थी। यहां उठारह दिन के प्रवास में मीरां ने सरयू के सुमित्रा, कौशल्या, कैकई तथा गो घाट पर स्नान किया। दूसरी बार जब मीरां आई तब वह चित्तौड़ से निष्कासित होकर भ्रमण करते आई। इस खाकी अखाड़ा मन्दिर में भी मीरां आई।

हमने अपनी यात्रा में यह मन्दिर भी देखा और यहां के महन्त वासुदेवदासजी से बड़ी देर तक भेंट की। ये सन्त बड़े प्रभावी तथा पहुंचे हुए लगे। एकबार उन्होंने चित्रकूट में छह माह की समाधि ली। लोगों ने समझा कि उनका शरीरान्त हो गया तब समाधि खोली गई और ये पूर्णत: स्वस्थ पाये गए। उनके हाथ में एक बड़ा उभरा नाक नक्श वाला बड़ा ही सुन्दर शालिग्राम देख सबको अचरज हुआ।

हमारी उत्सुकता गुणवन्तदासजी की गादी परम्परा जानने को थी सो महन्तजी से अरदास करने पर वे ध्यानमग्न हुए और उनके बाद की गादी-परम्परा के महन्तों के नाम बताते बोले, गुणवन्तदास के हरिदास, जगन्नाथदास, केशवदास, मनोहरदास, पुरुषोत्तमदास, दयारामदास, गिरधारीदास, माधवदास, पुरुषोत्तमदास, रामशरणदास, देवदास, लक्ष्मणदास, जानकीदास, रामदास और भगवान दास हुए। भगवानदास के बाद वर्तमान वासुदेवदास ने गद्दी सम्भाली।

मीरां के पास जो शालिग्राम था वह मेड़ता राजमहल में ठहरे सन्त गुणवन्तदासजी से मीरां द्वारा हठपूर्वक प्राप्त किया गया था। जब मीरां बालकी थी।

यहां से मन्दिर दर्शन कर हम पुन: महन्तजी से विदा लेने पहुंचे तब उनकी चेली लक्ष्मणदास उनकी दाढ़ी और जटा सम्भाल रही थी। हमारे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जब हमने उनकी श्वेत दाढ़ी को दस फीट तक बढ़ी हुई और मोटी रस्सी की तरह दाढ़ी से भी बड़ी जटा देखी।

हमारे लिए सर्वाधिक अचरज एक मन्दिर के गर्भगृह के ठीक द्वार के बाहर एक ओर दीवाल से सटे छोटी थड़ी के सन्त को देख हुआ। उनकी विशाल ललाट पर चन्दन के लेप पर मोटा तिलक, गले में मोटे तथा छोटे मनकों की दो मालाएं, जनेऊ धारण की हुई, बड़े स्तन, अस्त-व्यस्त दाढ़ी और जटाएं, कटिप्रदेश को मामूली ढकता शेष पूरा शरीर उघाड़ा, झुर्रियों का अलख देता बूढ़ा शरीर; पता नहीं इस या किसी अन्य लोक का रहस्यमय लगा सन्त न पहले और न उसके बाद ही देखने को मिला।

अयोध्या आज भी मेरे लिए अजूबी बनी हुई है। ऐसे में मेवाड़ में प्रचलित रासधारी खेल का वह गीत अयोध्या की सदा ही मुझे याद दिलाता रहता है- 'आज रो दन आनंद अयोध्या में राम पधारिया।'

जगमग-जगमग दीवाली

-डॉ. इकबाल सागर-

उजली-उजली है चादर,
जगमग-जगमग दीवाली,
खुशियां लाई हैं घर-घर,
जगमग-जगमग दीवाली।
गलियों-गलियों में झूम रहे हैं,
दीप खुशी के प्रकाशों से,
लाई उजाले थाले भरकर, जगमग-जगमग दीवाली।
लक्ष्मी छन-छन नाच रही है, चैन की बंसी बाज रही है,
गीत जगाये दिल के अंदर, जगमग-जगमग दीवाली।
धन दौलत के राज मुकुट को, सुख साधन के ताजमहल को,
बांध रही है सबसे सर पर, जगमग-जगमग दीवाली।
मन मंदिर में छाई खुशियां, नाच रही मिलकर सखियां,
चांद से भी लगती है बढ़कर, जगमग-जगमग दीवाली।
गुलशन-गुलशन महकायेगी, हर दिल में खुशियां लायेगी,
निखरी-निखरी सुंदर-सुंदर, जगमग-जगमग दीवाली।
छूट रही है फुलझड़ियां सी, हर मन में उत्साहों की,
ले आई है शोभा मुख पर, जगमग-जगमग दीवाली।
लूट रहे हैं लूटने वाले, खूब मजे देख लो 'सागर',
बांध रहे हैं रूप के झूमर, जगमग-जगमग दीवाली।

शब्दरंजन में सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि बनायें।

संरक्षक	**11000/**
विशिष्ट सदस्य	**5000/**
आजीवन सदस्य	**3000/**
शब्दरंजन के सहयात्री	**1000/**
साहित्यिक चौपाल	**500/**
वार्षिक संस्थागत	**300/**
वार्षिक व्यक्तिगत	**250/**

(**Shabd Ranjan**, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c)

ARCHI'S GALAXY

मेरा घर, मेरा अभिमान

RAJ/P/2018/788 | rera.rajasthan.gov.in

मुख्यमंत्री जन आवास योजना

₹2.67* लाख तक ब्याज सब्सिडी | 4% GST में छूट | 3-4% रजिस्ट्री शुल्क में छूट

PHASE 2 LAUNCHED

इस दिवाली कार की रेट में मकान खरीदें

1 BHK
10.71* लाख में

2 BHK
15.91* लाख में

Site Address: NH76, एयरपोर्ट रोड, पावर हाउस के सामने, देबारी, उदयपुर (राज.)

86195 98730 | 80035 97923

शब्द रंजन

उदयपुर, शुक्रवार 01 नवम्बर 2019

सम्पादकीय

गुमनामी के अंधेरे में सभ्यता-संस्कारों के चिन्ह

इतिहास सदा ही विशिष्ट, अति विशिष्ट व्यक्तियों का लिखा गया। इसी कारण उसकी सच्चाई सदैव संदिग्ध रही। इनका इतिहास लिखने वाले निष्पक्ष नहीं रहे। वे उन व्यक्तियों के सेवादार, शरण-सेवक तथा लोभ-लाभ के प्राप्तकर्त्ता भी कहे गये। एक स्वर यह भी उभरा कि असली इतिहास उन साधारण किन्तु विशिष्ट कामगारों का भी रहा किन्तु वह तो कभी लिखा ही नहीं गया। ऐसे ही अध्यात्म के क्षेत्र में जो सामान्य व्यक्ति पूरे डूबकर रहे किन्तु उन्होंने अपनी कोई पहचान नहीं दी, वे अधिक स्वीकारे भी गये और बाद में अनेक रूपों में उनकी मौखिक स्मृति चलती रही।

बच्चों द्वारा ग्रीष्म में जब पानी कम रह जाता है तब तालाब में जो खेल कंकरी उछाल पकड़ने का खेला जाता है उसमें रामा भंगी का नाम आता है। गवरी खेल में धार्‌या भील, जाऊड़ी, मंगली भीलण का उल्लेख मिलता है। रैदास चमार का नाम मीरांबाई के गुरु का कहा जाता है। कावड़ में कुंदणाबाई, अणदा खाती, कबीरा कासी का, सैन भगत नाई, धन्ना जाट, सबरी भीलण, करमाबाई, नामदे छींपा, नरसी मेहता का नाम बंचता है। रेबारियों में गाये जाने वाले गाथा-गीतों में रतना रेबारी, लाली लवारण का स्मरण और रूपा की सौगन चलती है।

रामदेवजी के ब्यावले में हरजी भाटी, डालांबाई, डूंगजी जवारजी धड़ेती की गावणी में लोट्‌या जाट और अनेक भजनों में देवा, गंगा, मोगा, वाली, जेतू, केवल कूबा, तिलोकचन्द जैसे मीणा, गमेती, भील, भीलण के नाम-छाप लोगों के कण्ठों पर आसीन हैं। इनमें बहुतसों के बारे में पूरी जानकारी नहीं है। बहुत अधिक खोज भी नहीं की गई है। जो शास्त्रोक्त ग्रन्थोक्त जानकारी मिलती भी है वह तो है ही पर लोकजीवन में उनकी मान्यता भिन्न रूप में भी है। उसका यदि अध्ययन किया जाय तो अचरज ही होगा कि कैसे ऐसी सारी जानकारी अब तक सुरक्षित रही है।

उदाहरण के लिए सरवण अपने माता-पिता को मेवाड़ में भी तीर्थ-दर्शन कराने लाया। उसकी यादगार में सलूम्बर के पास सरवण भाड़ा गांव बसा हुआ है। इसी क्षेत्र में सीता रही। सीसारमा और वहां का सीतामाता मन्दिर साक्षी है। लव-कुश का इधर ही पालन-पोषण हुआ। अनेक पहाड़, गुफाएं, खण्डहर बहुत कुछ कहते हैं। हिरण्यकश्यप इधर रहा। उसके महल हैं। यहां के कई गढ़ गढ़ैया तो अभी इतिहास का कोई स्पर्श ही नहीं कर पाये हैं। विश्व की सबसे पुरानी चट्टानें, शैलचित्र, सभ्यता के चिन्ह इतिहासज्ञों की प्रतीक्षा में गुमनाम हैं। इनकी सुध लेने कोई माई का लाल कब आयेगा? आवश्यकता है दीपावली के जगमग करते ज्योर्तिमय प्रकाश से प्रेरणा लेकर विद्वान एवं खोजक इस अभाव की पूर्ति करने को प्रेरित होंगे।

दीवाली पर शब्द रंजन के सभी पाठकों, शुभचिंतकों, सहयोगियों, विज्ञापनदाताओं, ग्राहकों, परामर्शकों एवं सुधीजनों को हार्दिक बधाई।

शंख की सर्व महत्ता

-डॉ. पुरुषोत्तम छंगाणी-

भारतीय संस्कृति का एक उज्ज्वल पक्ष है- भाई-बहन का प्यार। इस अलौकिक प्रेम का संदेश जनमानस में पहुंचाने की दृष्टि से रक्षाबंधन जैसे पर्व का विधान रचा गया है।

इतिहास साक्षी है कि बहन ने अपने भाई की रक्षार्थ अपने पति प्रेम को भी नजरअंदाज कर दिया था। दीपावली से पूर्व अष्टमी को 'अहोही आठम' का तंत्र मण्डित आयोजन सर्वत्र विद्यमान है। यह आयोजन भाई की मंगलकामना के लिए ही होता है।

इसके अतिरिक्त दीपावली के बाद 'भैयादूज' का अनुष्ठान होता है, जिसे 'यम द्वितीया' भी कहते हैं। इसी दिन यमराज अपनी बहन यमुना के घर भोजन करने आते हैं और भोजन के बाद भेंट स्वरुप वरदान दे जाते हैं। आज भी 'यम द्वितीया' के दिन भाई-बहन एक साथ यमुना नदी में पवित्र स्नान करते हैं। पूजा-अर्चना करते हैं और भाई द्वारा बहन को भेंट दी जाती है।

देवी लक्ष्मी ने भी आदर्श भ्रातृ-प्रेम की अनूठी मिसाल कायम की थी। समुद्र मंथन के दौरान लक्ष्मी के साथ-साथ शंख भी प्रकट हुआ था। अतः सिंधुजा होने के नाते लक्ष्मी ने शंख को अपना भाई माना। इसलिए भी लक्ष्मी का एक नाम सिंधुजा भी है। लक्ष्मी का भ्रातृप्रेम इतना गहरा था कि उसने अपने भाई शंख को न सिर्फ देवालयों तक पहुंचाया, बल्कि जनआस्था व श्रद्धा का पात्र भी बनाया।

समुद्र मंथन का कार्य सुर-असुरों ने मिल कर किया था। मंथन के पश्चात् समुद्र से चौदह रत्नों के साथ अन्य वस्तुएं भी प्राप्त हुई। केवल शंख ही एक ऐसा था जिसे किसी ने स्वीकार नहीं किया।

सभी ने उसे देखा-परखा अवश्य पर उपहास के साथ छोड़ दिया। लक्ष्मीजी को इस बात का भारी दुःख हुआ कि शंख की महत्ता को किसी ने भी नहीं जाना। भगवान विष्णु ने लक्ष्मीजी को चिंतित व उदास देख पूछा तो लक्ष्मीजी ने शंख के प्रति देवगणों के उपेक्षा भाव से अवगत कराया।

लक्ष्मी ने विष्णु से कहा कि वे शंख को मान-सम्मान के साथ ग्रहण करेंगे तो इसकी कीर्ति तीनों लोकों में विस्तारित हो सकेगी। विष्णु ने तब शंखनाद किया जिसकी गूंज सब लोकों में पहुंची। देवताओं ने ऐसी गूंज पहले कभी नहीं सुनी थी।

जब उन्हें पता चला कि वह ध्वनि विष्णुलोक से आ रही है तो उन्होंने महर्षि नारद से उस ध्वनि का स्रोत पता लगाने की विनती की। नारदजी की प्रार्थना पर विष्णु ने शंख दिखाया और उसकी महत्ता का वर्णन कर, फिर से शंखनाद किया। उसी समय अन्य देव-देवियां भी वहां आउपस्थित हुईं। शिव, गणेश, दुर्गा आदि ने विष्णु से शंख प्राप्त कर धारण कर लिया।

भगवान विष्णु ने शंख को फलदायी होने का वरदान दिया और देव पूजा या अनुष्ठान से पूर्व शंखध्वनि करना अनिवार्य किया। उनकी कृपा से शंख में रखा जल अमृत तुल्य माना जाने लगा। फलतः आरती के पश्चात् शंख में जल भर कर अभिषेक करना और फिर उस पावन जल को भक्तजनों पर छांटा जाना शुरू हुआ।

उल्लेखनीय है कि शंख को विशेष सम्मान प्रदान करने के लिए देवालयों में अलग से विशिष्ट त्रिपगा आसन रखा जाता है जो 'टिकटी' कहलाता है। इसकी चंदन एवं तुलसी से विधिवत् पूजा की जाती है। शंख की महत्ता सर्वमान्य, ध्वनि मंगल व कल्याणकारी तथा पूजा अभीष्ट फलदायी होती है अतः हर पूजा में शंख का स्थान अनिवार्य मिलता है।

डॉ. भानावत जार के पुनः जिलाध्यक्ष बने

उदयपुर। डॉ. तुक्तक भानावत जर्नलिस्ट एसोसिएशन ऑफ राजस्थान (जार) के पुनः जिलाध्यक्ष बनाये गए। बुधवार को हुई बैठक में डॉ. भानावत को सर्वसम्मति से उदयपुर इकाई का अध्यक्ष चुना गया। चुनाव पर्यवेक्षक मुकेश मुन्दड़ा एवं अजयकुमार आचार्य ने बताया कि इसके लिए जार के प्रदेशाध्यक्ष हरिवल्लभ मेघवाल एवं प्रदेश महासचिव अतुल अरोड़ा ने अपनी स्वीकृति प्रेषित की है। इस अवसर पर डॉ. तुक्तक भानावत ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि आने वाले समय में जार संगठन को अधिक सक्रिय एवं पत्रकारों के हितार्थ मजबूत बनाया जाएगा। बैठक में सुमित गोयल, संजय खाब्या, शैलेष व्यास, डॉ. रवि शर्मा, कपिल श्रीमाली, भूपेश दाधीच, पवन खाब्या, भूपेन्द्रकुमार चौबीसा, अल्पेश लोढ़ा, राजेन्द्रकुमार पालीवाल, शैलेष नागदा आदि ने डॉ. तुक्तक को बधाई दी।

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

देश और प्रदेश के हर व्यक्ति को विश्व स्तरीय चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराता संभाग का सर्वश्रेष्ठ हॉस्पीटल व मेडिकल कॉलेज

14.50 लाख से अधिक मरीजों का सफल उपचार | 800 बेडेड हॉस्पीटल | 70 बेडेड आई.सी.यू. | 18 डायलिसिस युनिट | 16 ऑपरेशन थियेटर

PIMS हॉस्पीटल, उमरड़ा, उदयपुर

मल्टीसुपरस्पेशियलिटी सुविधाएं

- कार्डियक सर्जरी
- कार्डियोलॉजी
- न्यूरोलॉजी
- न्यूरो सर्जरी
- यूरोलॉजी
- कैंसर सर्जरी
- प्लास्टिक एवं बर्न सर्जरी
- पीडियाट्रिक सर्जरी
- नेफ्रोलोजी

जनरल स्पेशियलिटी सुविधाएं

जनरल मेडिसिन | प्रसूति एवं स्त्री रोग | जनरल सर्जरी | नाक, कान, गला | हड्डी एवं जोड़ रोग
त्वचा एवं चर्म रोग | टी.बी. चेस्ट एवं श्वास रोग | बाल चिकित्सा | नेत्र रोग | मनोरोग चिकित्सा

आमजन हेतु उपलब्ध सरकारी सुविधाएं

- आयुष्मान भारत महात्मा गांधी राजस्थान स्वास्थ्य बीमा योजना
- राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम
- राजस्थान एड्स कन्ट्रोल सोसायटी
- परिवार नियोजन एवं जननी सुरक्षा योजना
- डॉट्स टी.बी. एवं क्षय रोग

डायग्नोस्टिक विश्वस्तरीय मशीनों द्वारा जांच व निदान, MRI (1.5 T), CT-Scan (128 Slice), CD4 Count की सुविधा उपलब्ध, अल्ट्रासाउण्ड, इको कार्डियोग्राम, एलर्जी टेस्ट (Phadia 100), Hb-Vario (HPCL), ADVIAXP (CLIA), TB-PCR (Gene Xpert)

▸ मोड्यूलर ऑपरेशन थियेटर ▸ आई सी.सी.यू. ▸ आई.सी.यू. ▸ पी.आई.सी.यू. ▸ एन.आई. सी.यू. ▸ बर्न आई.सी.यू. ▸ ब्लड बैंक

साई तिरूपति यूनिवर्सिटी, उदयपुर

पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस

MBBS, M.Sc. (Medical Sciences)

वेंकटेश्वर कॉलेज ऑफ नर्सिंग
B.Sc., M.Sc. (नर्सिंग)

वेंकटेश्वर स्कूल ऑफ नर्सिंग
GNM

वेंकटेश्वर कॉलेज ऑफ फिजियोथैरेपी
BPT

वेंकटेश्वर इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मेसी
D. Pharmacy

Star Add Media Pvt. Ltd.

Ph.D. PROGRAMME

▸ Anatomy ▸ Biochemistry ▸ Physiology ▸ Pharmacology ▸ Microbiology ▸ Nursing

For Admission enquiry contact : 9587890081, 9587890082

PIMS पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस, उमरड़ा, उदयपुर

अम्बुआ रोड़, उमरड़ा, उदयपुर (राज.) 313015 | Phone : 0294-3010000, Mob.: 8696440666 | Email: info@pacificmedicalsciences.ac.in Web: www.pacificmedicalsciences.ac.in

जगमग दीवलो जलै जी सारी रातां

– डॉ. कहानी भानावत –

दीवाली दीप का, प्रकाश का, रोशनी का त्यौहार है। प्रकाश वह जो कुलबुलाये नहीं, चकाचौंधे नहीं अपितु जगमगाहट दे। पूरी रात को मधुरे-मधुरे मिठास दे। इसीलिए महिलाओं में गीत पाया जाता है- जगमग दीवळो जलै जी सारी रातां। वह प्रकाश क्या जो बुझ जाये, बुझ दिल हो जाये। जो पूरी रात को जगमगाहट दे वही तो प्रकाश है। दीवाली ऐसे ही प्रकाश से पूरी धरा को ज्योतित किये रहती है।

मधुर-मधुर दीपक दीवाली को ही आलोकित नहीं करता, अनेकों को प्रकाश दिखाता है। भटकों से बचाता है। अंधेरे को ज्योतिर्मय करता है। इसीलिए भारत को ज्योतिर्मय देश कहा गया है। दीवाली जैसी यहां मनती है वैसी अन्यत्र कहीं नहीं मनती।

दीवाली मुख्य रूप से धन प्राप्ति का भी त्यौहार है। यहां गोधन की पूजा सर्वत्र व्याप्त है। गोधन का कई रूपों में शृंगार किया जाता है। उन्हें अच्छा खिलाया-पिलाया जाता है और विधिवत पूजा अभ्यर्थना की जाती है। उनका गोबर खेतों में खाद का काम करता है। उसी से फसल लहलहाती है। धनधान्य उपजता निपजता है। यह गोबर ही हमारा राष्ट्रधन कहा गया है।

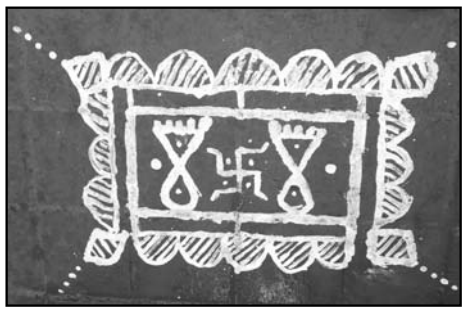

दूसरा धन देती है धन की देवी लक्ष्मी। इसलिए पूरे घर-आंगन-आलों-दीवालों की सफाई कर लक्ष्मी का आह्वान किया जाता है। कोई जगह ऐसी नहीं छोड़ी जाती जहां साफ सफाई कर घर-आंगन की लींपाई-पुताई नहीं की गई है। हर स्थान पर भांति-भांति के माण्डने माण्डे जाते हैं। छोटे-छोटे आल्यों-घाल्यों को भी छोटे-छोटे माण्डनों से सजाया जाता है। स्थान तथा आवश्यकतानुसार उनका विविध

शक्ल में बेल, डमरू, पान, बीजणी, फूल, फूलझड़ी, चौपड़, गलीचा, पथवारी, शीतला, खांडा, रथ, झाड़, लहरिया, घेवर, फीणी, तोता, मोर, हंस, काग, चंग, ढोलकी जैसे माण्डनों से सजावट शृंगार किया जाता है ताकि लक्ष्मी पूरी तरह तुष्ट हो ऋद्धि-सिद्धि-समृद्धि की वर्षा करे। जीवन खुशहाल हो। धनधान्य का भण्डार भरा रहे। सर्वत्र शान्ति, खुशहाली और अमन चैन रहे। खेत, खेती और खलिहान सदा सर्वत्र फलते-फूलते रहें।

माण्डने स्वयं सकारात्मक ऊर्जा देते हैं। मन को प्रफुल्ल करते हैं। घरों में बड़े-बड़े चौक, चौकी, पटशाल, यहां तक कि पशु-ठाण तक को माण्डनों से दमकाया जाता है। गृह लक्ष्मियां जितनी भी कल्पना कर सकती हैं उतने वैविध्य तथा नव्य-भव्य रूप में अपने-अपने घरों को माण्डनों से मुळकाती हैं। यही नहीं, उन्हें और खूबसूरती देने के लिए उनके आसपास विविधरूपा चंवरे, चीरण, सेवरे तथा भारती के आंके-बांके रेखांकन करती हैं। ये अंकन नकारात्मक शक्तियों को गृहप्रवेश करने से रोकते हैं। परिंडा तथा चूल्हा जैसी जगह पर भी माण्डनें शोभित होते हैं।

देहरी दीवारों द्वारों पर बड़े कलात्मक देव प्रतीकों के अंकन सामाजिक सरोकारों के शुद्धिकरण के साथ -साथ धार्मिक आस्थाओं तथा दैनिक जीवन चक्रजनित सौंदर्य दृष्टि को भी प्रतिबिंबित करते हैं। देवी-देवताओं का चित्रांकन उनकी पौराणिक आस्थाओं और लोकमान्यताओं के अनुरूप किया जाता है। ये अंकन मिट्टी कुमकुम खड़ी तथा अन्य प्राकृतिक रंगों से किये जाते हैं।

देहरी के बाहर से पूजास्थल तक लक्ष्मीजी के पगल्ये तथा दीपक के माण्डनें कोरे जाते हैं। उनके साथ सिक्के भी अंकित किये जाते हैं। पूजास्थल पर तो चांद, सूरत, सातिया, दीपक, फूल, मिष्ठान्न के विविध माण्डनों के बीच लक्ष्मीदेवी के पगल्यों को प्रमुखता के साथ माण्डा जाता है और पूरा परिवेश सिक्कों के माण्डनों से दमकाया जाता है। लगता है जैसे साक्षात् लक्ष्मीजी का पदार्पण हो गया है। पूरा घर नृत्यमय लग रहा है। जगह-जगह के स्तंभ जैसे हंसी बिखेर रहे हैं और खाट माचा मचली तक रेलमपेल करते दृष्टिगोचर हो रहे हैं।

अयोध्या में राम पधार्‌या

– डॉ. तुक्तक भानावत –

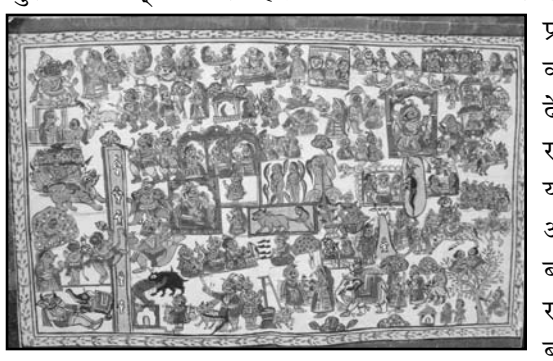

दीवाली से अनेकों मिथक, कहानी-किस्से और घटना-प्रसंग जुड़े हुए हैं। इस दिन अनेक दिव्य पुरुषों को सद्गति मिली है। अनेक

सत्पुरुष निर्वाण को प्राप्त हुए। अनेक मोक्षगामी हुए हैं। लेकिन सर्वाधिक प्रसिद्धि लोकमानस में अत्यन्त गहरी पैठ लिये राम की मिलती है। राम की अनेकरूपों में भारतीय जनमानस ने अभ्यर्थना की है। यूं कहा जा सकता है कि प्रत्येक के घट-घट में राम की व्याप्ति है। जीते जी ही नहीं, मरते वक्त भी राम नाम की ही दुंदुभि चलती है।

अयोध्या के राम सर्वत्र व्याप्त हैं। लोककण्ठों में अनेक रूपों में, अनेक विधाओं में राम की चिंतारणी प्रसाद की तरह फैली हुई है। जगह-जगह गीत सुनने को मिलते हैं- 'आज रो दन आनंद, अयोध्या में राम पधार्‌या।' इस दिन जितना हर्ष-उल्लास अयोध्या में हुआ, कहीं नहीं हुआ।

चौदह वर्ष का वनवास पूरा कर राम, सीता, लक्ष्मण लौटे। रावण सहित अनेक राक्षसों का वध कर जो विजयश्री राम ने प्राप्त की वह पूरे विश में डंका बजा गई। राजस्थान में रामजीवन को मंचित करते अनेक प्रदर्शनकारी कलाधर्मी रूप-स्वरूप प्रचलित हैं। ख्याल-तमाशों से लेकर स्वांग तथा लीला दृश्यों में अनेक प्रकार से रामचरित का प्रभावी मंचन देखने को मिलता है। रामलीलाओं के ही यहां अनेक रूप हैं। आंचलिक भाषा-बोलियों में भी रामलीला के प्रसंग बड़े मनोहारी ढंग से देखने को मिलते हैं। कहीं मुखौटा प्रधान लीला है तो कहीं मूक रामलीला का दरसाव है। मेवाड़ में गुड़ली का गंगाराम का रासधारी ख्याल बड़ा प्रसिद्धि लिये रहा।

काष्ठशिल्प कावड़ तो पूरा ही रामजीवन की लीला चित्रावलियों का अनोखा पिटारा लगता है। कावड़िया भाट इसे अपने साथ लिये गांव-गांव, घर-घर खोलता हुआ उसके प्रत्येक पाट पर चित्रित चरितावली का बड़े मीठे लयकारी अन्दाज में वाचन करता है और सबको रामजीवन का तीर्थाटन करा देता है। ऐसा ही कपड़े पर बना चित्रपट रामदला है जो पड़ अथवा फड़ के रूप में लोकप्रिय है। इसे फैलाकर वाचक नृत्यमय अनुष्ठानपूरक दर्शकों को रसमय जीवन जीने की संयमित एवं मर्यादित पुरुषोत्तम चर्या देता है। वाद्यों में रावणहत्था, माट, ढोलक, हारमोनियम पर रामायण सुनाने वाले भी सबको रसमग्न किये रहते हैं।

रोशनी से नहाते शहर सिंगापुर में दीवाली की रौनक

– डॉ. शकुंतला पंवार –

भारतीय त्यौहारों में दीवाली का त्यौहार सर्वाधिक उत्साह, उमंग और आनन्द देने वाला है। इसे भारत में ही नहीं, पूरे विश में बड़े रौनक और रोशन से मनाया जाता है। मेरा यह सौभाग्य रहा कि मैंने सन् 1964 से 1993 तक भारतीय लोककला मण्डल के संस्थापक प्रख्यात प्रदर्शनकारी लोकधर्मी लोककलाकार देवीलालजी सामर के नेतृत्व में कला रंगमंच में बतौर मुख्य अभिनेत्री के रूप में अपनी सेवाएं दीं। इस दौरान देश के लगभग सभी प्रान्तों तथा विदेश के अनेक नगरों में लोकनृत्यों, नृत्यनाटिकाओं तथा कठपुतलियों के सैकड़ों प्रदर्शनों के माध्यम से रंगारंग कला-संस्कृति तथा संस्कारजनित भारतीयता के पारम्परिक जीवनचक्र की पहचान देते अमिट छाप छोड़ी।

इस दौरान लगा कि भारत ही वह भूमि है जहां के रंग वैभव और जीवनानन्द में वह शक्ति है जो पूरे विश्व को अपना बना सकती है और यह भी कि जीवन का सबसे बड़ा सुख चित्त की प्रसन्नता, स्वस्थता और मनोरंजकता में है इसलिए हमारे यहां सर्वत्र अगणित त्यौहार, उत्सव, रागरंग के अवसर, मेलेठेले तथा नाचगान के आयोजन होते रहते हैं। हमारी प्रदर्शन यात्राएं निरन्तर होती रहतीं। ये यात्राएं महीने, दो-दो महीने तक भी चलती रहतीं। कई बार ऐसा हुआ जब हम महत्वपूर्ण त्यौहार पर ही नहीं, अपने पारिवारिक खास अवसरों-उत्सवों में भी शरीक नहीं हो सके।

दीवाली जब-जब भी आती है, अनायास ही मुझे सिंगापुर में मनाई गई वह दीवाली याद हो आती है। इसलिए भी कि हमारी जो यात्रा थी वह सिंगापुर में प्रदर्शन देने की नहीं थी किन्तु दीवाली का त्यौहार आने के कारण हमारे ठहरने की व्यवस्था सिंगापुर में कर दी गई। हमारी यात्रा स्वीडन, बेल्जियम व हालैण्ड की थी। स्वीडिश सरकार के नृत्य संग्रहालय के आमंत्रण पर हमने स्वीडन के गोथनबर्ग, लिंशोपिंग, लुनीवड, स्टोकहोम, सूंड्सवाल, उमियों, राबर्टस् फार्स एवं अवस्था ; हालैण्ड के गोशव, दोटर्डम तथा बेल्जियम के ब्रूसल्स नगरों में कुल 42 प्रदर्शन दिये। सन् 1977 में यह यात्रा की गई। हम कुल 12 कलाकार थे। उनमें से दो वादक तथा एक गायिका नारायणीदेवी थी जो हारमोनियम के साथ बड़े मधुर स्वर में सभी तरह के गीत गाने में दक्षता लिये थी।

सिंगापुर की वह रात रोशनी से इस कदर लकदक रही कि रात होने का हमें एहसास ही नहीं हुआ। दिन की तरह ही पूरा शहर चलायमान रहा। वहां के लोगों के साथ हम भी नाचते-कूदते आमोद-प्रमोद करते रहे। वहीं हमें एक सड़क पर एक भारतीय मण्डल मिल गया। अपने देश के लोग जहां भी मिल जायें, आपसी भाइचारे और हेलमेल की कई गंगा-जमुनी दास्तानें खुल पड़ती हैं। सबके सब बांसों उछल हमारे गले मिले। उनके साथ हमने भी गुजरात में प्रचलित टिप्पणी, डांडिया रास तथा राजस्थान का तेराताली तथा आदिवासियों में प्रचलित वनवासी, घूमरा नृत्यों की प्रस्तुति देकर जैसे पूरे शहर को ही अपनी मुट्ठी में कैद कर लिया।

इस पूरे यात्राकाल में अधिकांश रूप में हमारे ठहरने की व्यवस्था वहां के निवासियों के साथ उनके घरों में ही रही। हम दो-दो कलाकार साथ-साथ ठहरते। वहीं भोजन बनाते। जगह-जगह हमें आलू पालक तथा अन्य हरी सब्जी सुलभ हो जाती। हम सभी अपने साथ अचार, नमकीन तथा लहसुन मसाला रखते थे। रोटी तो जब कभी इंडियन एम्बेसी वाले हमारे भोजन की व्यवस्था करते तब ही हमें नसीब होती। हम सब सुबह 5 बजे से लेकर रात की 10 बजे तक अपनी प्रदर्शन-पोशाकों में ही रहते। लंच डिनर के पेकेट हमारे साथ-साथ चलते। दिन को हमारे प्रदर्शन वहां के स्कूल, वृद्धाश्रम तथा हॉस्पिटल में होते। रात्रि को किसी अच्छे थियेटर में विशिष्टजनों के समक्ष हमारे कार्यक्रम होते। लोकनृत्यों के साथ कठपुतली के माध्यम से सांप सपेरा, नर्तकी, पट्टेबाज तथा डुगडुगीवालों के करतब देख दर्शक लट्टू हो जाते।

ये सारे मुल्क ठंडे हैं। हमें सबसे ठंडा स्वीडन का उमियों लगा जहां हमने घुटनों तक की बर्फ सही। ऐसे मुल्कों में जाने-रहने के हम अभ्यस्त हो चुके थे। उनसे मुकाबला करने के पर्याप्त साधन हमारे पास थे लेकिन सिंगापुर की याद सबसे अलग वैशिष्ट्य लिये है। एक तो सारी यात्रा योजनाबद्ध थी। केवल सिंगापुर का पड़ाव अनियोजित, बंधनमुक्त उन्मुक्त था। फिर ऐसी दीवाली की हमें उम्मीद नहीं थी। लगा यदि हम यह अवसर खो देते तो पता नहीं कहां किस होटल में ही हम कैद हुए रहते और दीवाली कैसे यूं ही व्यतीत हो जाती, हमें पता ही नहीं चलता।

दीपोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं

जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड-टू-बी विश्वविद्यालय)

GRADE 'A' ACCREDITED BY NAAC

प्रतापनगर, उदयपुर - 313001 (राजस्थान) फोनः 0294-2492441 फैक्स : 0294-2492440
E-mail : admissions@jrnrvu.edu.in

सरस्वती देवयन्ते हवन्ते

संचालित पाठ्यक्रम

माणिक्यलाल वर्मा श्रमजीवी महाविद्यालय, फोन : 0294-2413029|2410776, मो. 9829160606

Faculty of Social Sciences & Humanities

•BA •MA •एम.फिल डिप्लोमा कोर्सेज : •पीजी डिप्लोमा इन जी.आई.एस. एण्ड रिमोट सेन्सिंग, बी.जे.एम.सी., पंचगव्य पद्धित (थैरेपी)।

सर्टिफिकेट कोर्सेस : •स्पोकन इंग्लिश, प्रोफिश्यिंसी इन इंग्लिश एण्ड कम्प्यूनिकेशन स्किल्स, कल्चर ऑफ राजस्थान, रिसर्च मेथड्स एण्ड डेटा एनालिस्ट, ह्युमन राइट्स।

Faculty of Commerce फोन : 0294-2413029,2410776, मो. 9460275655

•B.Com. •BBA •M.Com. •M.I.B. •एम.फिल.,
•मास्टर ऑफ एन.जी.ओ. मैनेजमेन्ट।

डिप्लोमा कोर्स : •पी.जी. डिप्लोमा इन ट्रेनिंग एण्ड डवलपमेन्ट।

सर्टिफिकेट कोर्सेस : •प्लास्टिक प्रोसेसिंग एण्ड मेन्युफेक्चरिंग स्किल्स, टेली, गुड्स एण्ड सर्विस टैक्स (जी.एस.टी.)।

Faculty of Science फोन : 9461179656, 9461109371

•**B.Sc.** (Physics, Mathematics, Chemistry, Statistics, Computer Science, Botany, Zoology)
•**M.Sc. Chemistry** (Inorganic, Organic, Physical, Industrial)
•**M.Sc. Mathematics**

ज्योतिष विज्ञान विभाग, मो. 9460030605

•एम.ए. ज्योतिर्विज्ञान •डिप्लोमा ज्योतिष •डिप्लोमा वास्तु •प्रमाण पत्र-ज्योतिष, वास्तु, हस्तरेखा, पूजा पद्धति कर्म काण्ड, वैदिक संस्कार संस्कृति (रविवार)

Evening College मो. 9829332300

बी.ए., बी.कॉम, एम.ए., एम.कॉम सभी विषय, एम.ए., एम.एस.सी. (मनोविज्ञान) एम.ए. (म्यूजिक), बी.लिब, एम.लिब, बी.एड. (स्पेशल एम.आर.), डी.सी.बी.आई, डी.एड (आर.सी.आई से मान्यता प्राप्त), पीजी डिप्लोमा इन गाइडेंस एवं कांउसलिंग, बी.जे.एम.सी. एवं डी.जे.एम.सी.।

Department of Physical Education Phone: 9352500445
•Diploma in Yoga •M.A. in Yoga •M.A. In Physical Education

Department of Physical Education मोबाइल : 9829943205, 9352500445

•मास्टर ऑफ फिजिकल एजुकेशन (M.P.Ed.) •MA (YOGA Education)

Department of Law मोबाइल 9414343363

•LL.B.(3 Years) •LL.M. (2 Years) •B.A.LL.B (5 Years) •PGDCL •PGDLFS •PGDLL

Department of Physiotherapy फोन : 0294-2656271 मो. 9414234293

•Master of Physiotherapy •Bachelor of Physiotherapy
•Fellowship in palliative care and oncology rehabiliatation
•Fellowship in neurological rehabiliatation

Faculty of Computer Science & Information Technology

फोन : 2494227, 2494217, मोबाइलः 9887285752, 9414737125

•**MCA** •**M.Sc.** (Computer Science)
•**PGDCA** •**BCA** • **MCA** (Lateral Entry)

Rajasthan Vidyapeeth Technology College

मो.9950304204 फोनः 0294-2490210

Diploma in Engineering (Polytechnic)

- Civil Engineering • Electrical Engineering • Mechanical Engineering
- Electronic Engineering & Communication Engineering
- Computers Science Engineering

Department of Pharmacy (फोन 0294-2492440, 9414869044

- D. Pharma (Diploma in Pharmacy)

Institute of Rajasthan Studies (फोन 0294-2491054)

•M.A.. प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विज्ञान (Archaeology)
•PG Diploma - पुरातत्व विज्ञान (Archaeology)

Udaipur School of Social Work (फोन 0294-2491809)

•MSW •PG Diploma-HRM • Rural Development (PGDRD)
•PG Diploma- •NGO Management • Talent Managemnt

Directorate of Janshikshan & Extension Programme

(फोन : 2490723, 9414737125)

•PG Diploma in Criminology & Police Science
• Diploma in Criminology & Police Science

School of Agricultural Sciences

• B.Sc. (Hons.) Agriculture (कृषि)• Diploma Course

Department of Travel. Tourism & Hospitality

Faculty of Management Studies 9950489333

Course Name	Duration of Course	Eligibility
BBA (Tourism & Travel) with Specialization in Hospitality	3 Years	12th Pass in any stream
Diploma in Hotel Management (Foord & Bevrage Service	1 Year	12th Pass in any stream
Diploma in Hotel Management (Food Production)	1 Year	12th Pass in any Stream

Girls College, Dabok

(फोनः 0294-2655223,मो. 9694881447)

•B.A.• B.Com.• B.Sc.• M.A. • M.Com • M.A. (Hindi, Pol. Sc., History, Geog, Sociology, Economics) • M.Com (Accountancy)
• Special classes for English Speaking and Computer Basics

R.V. Homeopathic Medical College & Hospital, Dabok

(फोन : 0294-2655974, 2655975, मोबाईल : 09414156701, 09351343740)

• बेचलर ऑफ होम्योपैथिक मेडिसिन एण्ड सर्जरी **(BHMS)**

Faculty of Management Studies (FMS)

(फोनः 0294-2490632 मोः 9461260408, 9782049628)

• MBA • MHRM

Note : For more information about the admission in various courses like minimum percentage, fee structure etc. please go through our website www.jrnrvu.edu.in, respective prospectus or contact concerned department

REGISTRAR

दीपक जला लेना

-प्रकाश नागोरी-

हर त्यौहार का
है दीपक जला लेना,
मन की अध्योध्या में
भी एक दीपक जला लेना।

(1)

अंधेरा डरपोक है चुटकियों में भाग जायेगा
इसे आजमाने को ही एक दीपक जला लेना।

(2)

वो भी हकदार है जगमगाती रोशनी का
अदा कर हक, उसकी देहरी पे दीपक जला लेना।

(3)

चांद हर रात नहीं आयेगा प्रहरी बन कर
द्वारपाल बनाकर द्वार पे दीपक जला लेना।

(4)

वो जो शहीद हो गये है अपने वतन के खातिर
उनकी याद में भी तू एक दीपक जला लेना।

(5)

वो रूठा है तुझसे तो पल में मान जायेगा
अपने दीये से तू उसका दीपक जला लेना।

(6)

द्वेष, लोभ, स्वार्थ, ईष्या अंधेरे के पर्याय है 'प्रकाश'
मिटाने को इन्हें अन्तस में एक दीपक जला लेना।

महिंद्रा ब्लेजो ट्रकों में अग्रणी

उदयपुर। महिंद्रा समूह के एक हिस्से महिंद्रा ट्रक और बस (एमटीबी) ने घोषणा की कि ट्रकों की ब्लेजो रेंज ट्रकिंग उद्योग के भीतर लाभ के मामले में अग्रणी बन गई है। ट्रकों की ब्लेजो श्रेणी ने लॉन्च के केवल तीन वर्षों में यह गौरव हासिल किया है और वर्तमान में बाजार की दूसरी कंपनियों की तुलना में प्रमुखता से बिक रही है। एमटीबी अब अपने बीएस-6 रेंज के उत्पादों के लॉन्च के साथ अपनी स्थिति को मजबूत कर रही है, यह प्रगति बहुत अच्छी तरह से ट्रैक पर है। यह अपने ग्राहकों के लिए बीएस-6 को सरल बनाने पर भी काम कर रहा है।

'4 सीएस ऑफ डायमंड क्वालिटी' पर सेमीनार

उदयपुर। जीआईए इंडिया ने उदयपुर में परिणय ज्यूवेल्स के ग्राहकों का ज्ञान और विश्वास बढ़ाने के लिए '4 सीएस ऑफ डायमंड क्वालिटी' पर सेमीनार आयोजित किया। 50 से अधिक हीरे के कद्रदानों और डायमंड आभूषणों के खरीदारों ने इस सेमीनार में भाग लिया। जीआईए के शिक्षक विजय परमार ने डायमंड के सुप्रसिद्ध - कलर, क्लेरिटी, कट और कैरेट वैट के बारे में बारीक परखों को साझा किया और बताया कि ये कैसे एक डायमंड की कीमत तय करने में योगदान करते हैं। इस सेमीनार से संभावित उपभोक्ताओं को भी डायमंड ग्रेडिंग की स्वतंत्र रिपोर्टों और प्रकटन के साथ बिक्री करने के लिए ज्वेलर की जिम्मेदारी के बारे में समझने में मदद मिली।

डॉ. लुहाड़िया ओरेशन अवार्ड से सम्मानित

उदयपुर। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल, उदयपुर के चेस्ट एवं टीबी विभाग के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ. एस. के. लुहाड़िया को दिल्ली के वल्लभभाई पेटल चेस्ट इंस्टीट्यूट द्वारा पांचवें डॉ. वी. के. विजयन ओरेशन अवार्ड से सम्मानित किया गया। इस अवार्ड के लिए हर वर्ष पूरे देश से एक चेस्ट फिजिशीयन का चयन वी. पी. चेस्ट इंस्टीट्यूट के गठित बोर्ड द्वारा किया जाता है। डॉ. लुहाड़िया के सम्मानित होने पर गीतांजली समूह के कार्यकारी निदेशक अंकित अग्रवाल, गीतांजली हॉस्पिटल के मुख्य कार्यकारी अधिकारी प्रतीम तम्बोली सहित सभी विभागाध्यक्षों एवं सहकर्मियों ने बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित कीं।

सेगवा में एथलीट ट्रेक का लोकार्पण

उदयपुर। हिन्दुस्तान जिंक के ग्रामीण विकास कार्यक्रम के अंतर्गत चित्तौड़गढ़ जिले की खेल प्रतिभाओं को राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनिधित्व करने, प्रोत्साहन एवं सुविधा देने के उद्धेश्य से सेगवा में 72 लाख से निर्मित किये गये चार सौ मीटर एथलिटिक ट्रेक का लोकार्पण चित्तौड़गढ़ सासंद सीपी जोशी, विधायक चंद्रभानसिंह आक्यां एवं चंदेरिया लेड जिंक स्मेल्टर की ओर से ईकाई प्रधान हाइड्रो सी चंद्रू ने किया। इस अवसर पर सीपी जोशी ने कहा कि रामावि सेगवा में हिन्दुस्तान जिंक के सहयोग से निर्मित इस एथलीट ट्रेक को खिलाड़ियों के लिए संपूर्ण सुविधायुक्त बनाया गया है। इस ट्रेक से राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिभाएं आगे आएंगी। विधायक चंद्रभानसिंह आक्यां ने कहा कि इस ट्रेक के बनने से राजकीय माध्यमिक विद्यालय सेगवा से राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनिधित्व करने वाली खेल की टीमों को प्रोत्साहन मिलेगा। विद्यालय की प्राध्यापिका लीला चावला ने अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

ऑस्ट्रेलिया में डॉ. अग्रवाल की पुस्तकें लोकार्पित

ऑस्ट्रेलिया के शहर पर्थ की साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्था 'संस्कृति' तथा हिन्दी समाज ऑफ पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के संयुक्त तत्वावधान में डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल की 'समय की पंचायत' और 'जो देश हम बना रहे हैं' का लोकार्पण किया गया। इनमें डॉ. अग्रवाल ने अपने समय, समाज, शिक्षा, विचार, साहित्य, संस्कृति, संचार माध्यमों आदि पर बड़ी बेबाकी से टिप्पणियां की है। प्रारम्भ में 'संस्कृति' के वरिष्ठ सदस्य और हिन्दी समाज ऑफ वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया के पूर्व अध्यक्ष प्रो. प्रेमस्वरूप माथुर ने डॉ. अग्रवाल का परिचय दिया। लोकार्पण हिन्दी समाज के अध्यक्ष अनुराग सक्सेना, प्रतिनिधि रीता कौशल, ट्रस्टी राज्यश्री मालवीय और प्रो. प्रेमस्वरूप माथुर ने किया।

डॉ. अग्रवाल ने 'आज का समाज और साहित्य' विषय पर रोचक व्याख्यान दिया। उन्होंने इस बात का प्रत्याख्यान किया कि आज की पीढ़ी की साहित्य में रुचि घट रही है। डॉ. अग्रवाल ने इसे भ्रामक कथन मानते हुए कहा कि असल में आज साहित्य में रुचि बढ़ रही है, खूब लिखा और पढ़ा जा रहा है। गद्य के क्षेत्र में काफी कुछ नया और उत्तेजक हो रहा है। खूब नए प्रयोग हो रहे हैं। कथेतर की दुनिया में अनेक महत्वपूर्ण काम हुए हैं। विधाओं में आवाजाही बढ़ी है और इण्टरनेट व तकनीक के सहज सुलभ हो जाने से लोगों में लिखने का चाव और उत्साह खूब बढ़ा है। कार्यक्रम का संचालन रीता कौशल ने किया।

धुली व कटी प्लास्टिक बोतलों के आयात पर प्रतिबंध

उदयपुर। प्लास्टिक कचरे के बोझ को कम करने के लिए, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने धुली तथा कटी हुई प्लास्टिक बॉटल्स के आयत पर प्रतिबंध लगा दिया है। तकरीबन 9,983 मीट्रिक टन कचरा जयपुर आईसीडी-कनकपुरा के जरिये देश में आयात हुआ था।

गैर-सरकारी संगठन पंडित दीनदयाल उपाध्याय स्मृति समिति (पीडीयूएसएम) द्वारा प्रस्तुत आयात आंकड़ों ने इस प्रतिबंध में अहम् भूमिका निभायी है। भारतीय रिसाइकिलर्स और कपड़ा उद्योग अनैतिक रूप से प्लास्टिक बॉटल्स के कचरे को फ्लैक्स के रूप में पाकिस्तान, बांगलादेश एवं अन्य देशों से आयात कर रहे थे, क्योंकि यह रीसाइक्लिंग के लिए स्थानीय स्तर पर उत्पादित प्लास्टिक कचरे को इकट्ठा करने की तुलना में सस्ता था। मंत्रालय के खतरनाक पदार्थ प्रबंधन विभाग ने इस विषय में एक अधिसूचना जारी की है।

आर्ची गैलेक्सी टाउनशिप-फेज 2 में आमजन को मिलेगा सपनों का घर

उदयपुर। मुख्यमंत्री जन आवास योजना के तहत बनाई जा रही आर्ची गैलेक्सी टाउनशिप-फेज 2 में आमजन को रियायती दरों पर अपने सपनों का सुंदर और गुणवत्तापूर्ण घर मिलेगा। हमने बरसों से लोगों को उनके बजट में शानदार घर देने का जो सपना संजोया है, उसे आर्ची गैलेक्सी के पहले फेज में पूरा कर दिखाया है।

अब फिर नई उम्मीदों के साथ कुछ और लोगों के सपनों को उसी प्रतिबद्धता व समयबद्धता के साथ साकार करना है। ये विचार आर्ची गैलेक्सी टाउनशिप के द्वितीय चरण के नए ब्लॉक्स के भूमि पूजन अवसर पर पार्टनर ऋषभ भानावत, संजय बांठिया और सम्भव बांठिया ने व्यक्त किए।

उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री जन आवास योजना के अंतर्गत बनने वाले आवासों में आर्ची ने गुणवत्ता का जो नया माइल स्टोन स्थापित किया हैं उसे सबने बहुत पसंद किया है। एलआईजी व ईडब्ल्यू एस श्रेणियों में इस बार वन बीएचके और टू बीएचके के फ्लैट्स की सौगात मिलेंगी। देबारी पावर हाउस के सामने आर्ची गैलेक्सी टाउशिप प्रोजेक्ट के द्वितीय चरण के फ्लैट्स की लोकेशन बहुत शानदार है ही निर्माण प्रक्रिया में गुणवत्ता से समझौता किए बिना हर बारीकी का ध्यान रखा जाएगा।

लोअर इनकम ग्रुप (एलआईजी) व इकॉनोमिकल वीकर सेक्शन (ईडब्ल्यूएस) के लिए तैयार किए जाने वाले फ्लैट के लिए कोई भी आवेदक मौके पर बने गुणवत्तापूर्ण फ्लैट्स का अवलोकन कर वांछित जानकारी ले सकता है। सैंपल फ्लैट्स को देखकर उसे बुक करवा सकता है। वन बीएचके में एरिया 516 वर्गफीट होगा। अनुमानित कीमत 10 लाख 71 हजार रुपए होगी। इसमें वन रूम, हॉल, कीचन, अटैच व कॉमन टॉयलेट, बॉलकनी, कीचन होंगे। टू बीएचके में एरिया 678 वर्गफीट है। अनुमानित कीमत 15 लाख 91 हजार रुपए होगी। इसमें दो बेडरूम, एक अटैच टॉयलेट, हॉल, बड़ी बॉलकनी, एक कॉमन टॉयलेट की सुविधा मिलेगी।

इस योजना के अंतर्गत सेंट्रल गार्डन, सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट, फायर सेफ्टी/फायर फाइटिंग सिस्टम, वर्षा जल संग्रहण, हर घर में आरओ वाटर और सेमि मॉडुलर किचन की सुविधा , एमेनिटीज में - जिम की सुविधा, इंडोर गेम्स, बैंक्वेट हाल-कमर्शियल - शॉपिंग एरिया, क्लिनिक, बैं क, एटीएम व पोस्टल सुविधाएं, ब्लॉक में लिफ्ट्स व कॉमन एरिया में पावर बे कअप, प्लांटेशन व ग्रीनरी, रेजिडेंशियल एरिया में सेपरेट एंट्री व एक्जिट तथा सिक्योरिटी केबिन की सुविधाएं होंगी।

'पीएएस' फेरोमोन एक्टिवटिंग स्प्रे लॉन्च

उदयपुर। टीटीके हेल्थ केयर लि. प्रोटेक्टिव डिवाइसेज डिवीज़न द्वारा प्रस्तुत भारत के एक प्रमुख रोग निरोधी ब्रांड स्कोर ने बॉलीवुड अभिनेता आदित्य रॉय कपूर के साथ 'पीएएस'- फेरोमोने एक्टिवेटिंग स्प्रे लांच किया। टीटीके प्रोटेक्टिव डिवाइसेज लि. के विपणन विभाग के महाप्रबंधक विशाल व्यास ने कहा कि पीएएस भारत की सबसे पहली अनोखी फेरोमोने एक्टिवेटेड बॉडी स्प्रे की श्रृंखला है जिसे बदन पर लगाया जाए तो ये अपने एक सक्रिय सामग्री 'सेन्सफील' के ज़रिए 'सेक्स अपील बूस्टर' की तरह काम करता है। फेरोमोने एक प्राकृतिक जैव-रसायन है जो गुप्त गंध संकेत भेजता है और जो मर्दों की कामुकता को बढ़ाता है।

विशाल व्यास ने कहा कि स्कोर ने हाल ही में 'ओह!' नाम से एक प्लेजर जेल भी लांच किया है, जो एक खास फ़ॉर्मूला से तैयार किया गया है, जो संबंध बनाते समय संवेदनाओं को बढ़ाता और गर्म या ठण्ड झनझनाहट की लहर पैदा करता है जो महिलाओं के चरम आनंद की तीव्रता को बढ़ाता है।

कमर मेवाड़ी को साहित्य प्रतिभा पुरस्कार

वरिष्ठ साहित्यकार कमर मेवाड़ी को डूण्डलोद विद्यापीठ की स्थापना के 23वें वर्ष में प्रवेश पर 12 अक्टूबर को श्रीमती शारदा रमाकान्त शर्मा स्मृति साहित्य प्रतिभा पुरस्कार से सम्मानित किया गया। पुरस्कार के अन्तर्गत शॉल, चांदी का श्रीफल, अभिनंदन पत्र तथा इक्कीस हजार रूपये नकद की राशि भेंटकी गई।

समारोह में मंचासीन विद्वानों में रमाकान्त शर्मा, डॉ. हेतु भारद्वाज, प्रो. राकेश जैन सहित डॉ. सूरज पालीवाल तथा मुकेश पारीक ने सम्बोधित किया।

- राधेश्याम सरावगी मसूदिया

12 वर्षों से आपके
गीतांजली हॉस्पिटल
बेहतर स्वास्थ्य के प्रति समर्पित

लकवे को पहचाने

GMCH
GEETANJALI HOSPITAL
HEALTH IS HAPPINESS

NABH ACCREDITED
PATIENT SAFETY & QUALITY OF CARE

B BALANCE

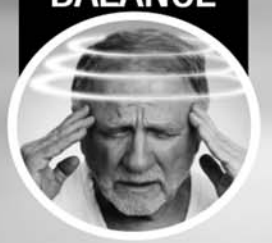

लक्षण – 1
अचानक संतुलन बिगड़ना
सहयोगी द्वारा रोगी से प्रश्न :
व्यक्ति को कुछ दूरी तक चलने के लिए कहें

E EYES

लक्षण – 2
आंखो की दृष्टि खो जाना
सहयोगी द्वारा रोगी से प्रश्न :
व्यक्ति को एक–एक करके दोनों आंखों से कुछ पढ़ने के लिए कहें

F FACE

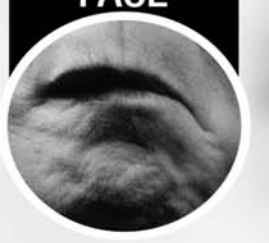

लक्षण – 3
चेहरा लटक जाना
सहयोगी द्वारा रोगी से प्रश्न :
व्यक्ति को मुस्कराने के लिए कहें

A ARM

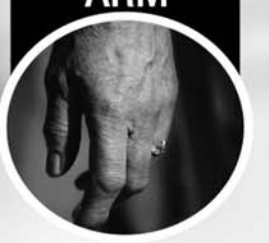

लक्षण – 4
बांह कमजोर होना
सहयोगी द्वारा रोगी से प्रश्न :
व्यक्ति से दोनों हाथ उठाने के लिए कहें

S SPEECH

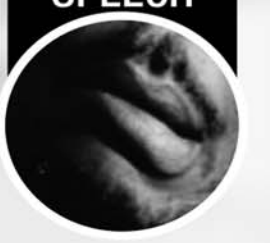

लक्षण – 5
बोलने में कठिनाई
सहयोगी द्वारा रोगी से प्रश्न :
व्यक्ति से कुछ बोलने के लिए कहें

T TIME

सहयोगी द्वारा किया जाने वाला कार्य:
चिकित्सक से तुरन्त सम्पर्क करें
3 घण्टे के अंदर अस्पताल पहुंचाएं

आईसीयू ऑन व्हील एम्बुलेंस 24 घण्टे उपलब्ध

गीतांजली
न्यूरोसाइंस सेंटर
Emergency No. : 8003 098 718

आप द्वारा समय पर की गई कार्यवाही से हमारे अनुभवी एवं प्रतिष्ठित चिकित्सकों द्वारा लकवेग्रस्त व्यक्तियों का उपचार सम्भव हो सकता है

- न्यूरोलोजी एवं न्यूरोसर्जरी आई सी यू
- संक्रमण रहित सीमलेस ऑपरेशन थिएटर
- न्यूरोलोजी, न्यूरो सर्जरी, न्यूरो इंटरवेंशनल रेडियोलोजी, इंटेन्सिविस्ट (क्रिटीकल केयर विशेषज्ञ), न्यूरो एनेस्थेटिस्ट, आपातकालीन दल एवं नर्सिंग स्टाफ का अस्पताल परिसर में स्थायी निवास जिससे मिनटों में रोगी तक पहुंच
- कम्पोनण्ट सुविधा के साथ ब्लड बैंक
- 24 घण्टे सी.टी./ एम.आर.आई, केथलेब

विश्व की सबसे अत्याधुनिक एवं नवीनतम तकनीक
3 Tesla MRI
(GE Architect 128)

3 Tesla
एम.आर.आई. द्वारा अत्याधुनिक स्ट्रोक इमेजिंग

गीतांजली अस्पताल है
स्ट्रोक रेडी
24/7 घण्टे न्यूरोसाईन्सेज़ की सुविधा
CT | MRI | Cath Lab

FIRST RESPONDER
MOBIKE AMBULANCE
7300 111 555

गीतांजली हॉस्पिटल

नेशनल हाईवे–8 बायपास, एकलिंगपुरा चौराहा के पास, उदयपुर (राज.)
0294 250 0044 www.geetanjalihospital.co.in

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर – 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311–ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294–2429291, मोबाइल – 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।